चार धाम ड्रिल अभ्यास

चार धाम
FOUR ABODE

मैं चमकती आत्मा हूँ, शक्तिशाली बनने के लिये मैं शांति स्तम्भ में पहुँच गयी हूँ ,व्यर्थ संकल्पों की समाप्ति के लिये हिस्ट्री हाल में पहूँच गयी हूँ , बाप समान बनने के लिये बाबा के कमरे में पहुँच गयी । अंत में स्नेह मिलन द्वारा ख़ुशी व आनंद से भरपूर होने के लिये बाबा की झोपड़ी में पहुँच चुकी हूँ ।

TOWER OF PEACE

शान्ति स्तम्भ – शक्तिशाली बनने के लिये

१८ जनवरी १९६९ को जब ब्रह्माबाबा अव्यक्त हुए तब उनके समाधि स्थल पर शान्ति स्तम्भ का निर्माण किया गया । यह पिताश्री ब्रह्मा के त्याग व तपस्या की स्मृति में निर्मित यादगार है । इससे निकलने वाले शान्ति, ज्ञान, शक्ति और पवित्रता का प्रकम्पन मानव-मात्र को पवित्र व योगी जीवन जीने की प्रेरणा देता है ।

मैं आत्मा अपने सूक्ष्म स्वरुप द्वारा मधुबन स्थित पहला धाम शान्ति स्तम्भ में पहुँच चुकी हूँ जिसे महाधाम कहते हैं । बाबा ने कहा है शक्तिशाली बनने की आवश्यकता हो तो शांति स्तम्भ पर पहुँच जाना ।

मैं आत्मा शक्ति से भरपूर मास्टर सर्वशक्तिमान हो गयी हूँ । मुझसे शक्ति की किरणें निकल सारे विश्व की आत्माओं एवं ५ तत्व में फ़ैल उनको भी शक्तिशाली बना रहा है ।

शांति स्तम्भ के समक्ष खड़े होने से ऐसी भावना आती है कि जैसे आज भी ब्रह्मा बाबा सूक्ष्म वतन से विशाल बाहे फैलाए बच्चों को सम्पूर्ण और संपन्न बन वतन में आने का आवाहन कर रहे हैं ।

HISTORY HALL

हिस्ट्री हाल - व्यर्थ संकल्पों की समाप्ति के लिये

यह सन १९६० में ब्रह्माबाबा द्वारा बनवाया गया । ज्ञान-यज्ञ के आदि रत्नों के चित्र हिस्ट्री हाल में प्रदर्शित किये गये हैं । यह बाबा-मम्मा द्वारा बनवाया हुआ ज्ञान-योग का पहला हाल है जो आज भी ब्रह्मा वत्सों का तपस्या कुंड है । इसी कक्ष में साकार ब्रह्मामुख कमल से निराकार शिव पिता के महावाक्य (मुरली) उच्चारित हुए हैं जिनको सभी स्थानीय सेवाकेंन्द्रो पर नियमित रुप से सुनाया जाता तथा सभी की आध्यात्मिक शक्तियों से पालना कर, श्रेष्ठ धारणायुक्त जीवन बनाकर सदगुणों से सशक्त बनाया जाता ।

मैं आत्मा अपने सूक्ष्म स्वरुप द्वारा मधुबन स्थित दूसरा धाम हिस्ट्री हाल में पहुँच चुकी हूँ । यह समर्थ स्मृतियों में समाने का धाम है ।

मुझ आत्मा के सारे व्यर्थ संकल्प स्टॉप हो गये हैं और उसके बदले समर्थ स्मृतियाँ इमर्ज हो चुकी हैं । मेरा मन बुद्धि शक्तिशाली एवं एकाग्र हो गया है ।

बाबा ने कहा है व्यर्थ संकल्प बहुत तेज चल रहे हों तो हिस्ट्री हाल में पहुँच जाना ।

बाबा का कमरा – बाप समान बनने के लिये

BABA'S ROOM

यह परमात्मा के साकार माध्यम पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का निवास स्थान था. उसी कमरे को अब योगानुभूति-कक्ष के रुप में प्रयोग किया जाता है। यहाँ एकाग्रता से बैठते ही लोगों को ईश्वरीय शक्ति व शान्ति का अनुभव होने लगता है । ईश्वरीय वाणी में इसे `स्नेह का धाम` कहा गया है ।

मैं आत्मा अपने सूक्ष्म स्वरुप द्वारा मधुबन स्थित तीसरा धाम बाबा का कमरा में पहुँच चुकी हूँ । यह समान बनाने वाला धाम है । बाबा ने कहा है समान बनने का दृढ़ संकल्प उत्पन्न हो तो बापदादा के कमरे में आ जाना ।

मैं आत्मा बापदादा के सभी गुणों व शक्तियों से भरपूर बाप समान बन रही हूँ ।

इस कमरे में बैठने वाले को गुणों का सागर बाबा, गुणों से भरपूर कर देता है । इस कमरे की उपयोगिता बताते हुए परमात्मा पिता ने कहा है, इस कमरें में जो आता है, बाप समान बनने का संकल्प दृढ हो जाता है ।

बाबा की झोपड़ी - जब मन उदास हो तो

BABA'S HUT

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इसे सन 1959 में निर्मिती करवाया । यहाँ ही तपस्या कर ब्रह्माबाबा ने रुहानियत में सम्पूर्णता प्राप्त की । ब्रह्माबाबा यहाँ संगोष्टिया करते, यज्ञ-वत्सों को पत्र लिखते व ज्ञानचर्चा करते थे. बाबा मम्मा द्वारा लगाया हुआ बगीचा भी यहाँ पर है, जिसमें अंगूर की बेल विशेष है, यह सबके मन को आकर्षित करता है. ईश्वरीय महावाक्यों में इसे स्नेह मिलन का धाम कहा जाता है ।

मैं आत्मा अपने सूक्ष्म स्वरुप द्वारा मधुबन स्थित चौथा धाम बाबा की झोपड़ी में पहुँच चुकी हूँ। यह स्नेह मिलन का धाम है। बाबा ने कहा है जब उदास हो जाओ तब झोपड़ी में रूहरिहान करने आ जाना।
मुझ आत्मा की सारी उदासी, चिंता दूर हो चुकी है। मैं ख़ुशी व आनंद से भरपूर हो गया हूँ।

त्याग-तपस्या, स्वच्छता और सादगी वाले इस जादुई स्थान पर बौठते ही जिज्ञासुओं के अंतकरण पावन होने लगते हैं ।

मधुबन के पाण्डव भवन स्थित चार मुख्य स्थान १) शांति स्तम्भ २) हिस्ट्री हॉल ३) बाबा का कमरा ४) बाबा की झोपड़ी । इन का स्मरण अथवा ड्रिल अभ्यास करना ही चार धाम की यात्रा करना है जिसे भक्ति मार्ग में श्रेष्ठ पुरुषार्थ मानते हैं । यह ड्रिल १ से ५ मिनट तक सारे दिन में अनेक बार कर सकते हैं या फिर एक समय में ३० मिनट भी किया जा सकता है । यह ४ धाम की ड्रिल अथवा एक्सरसाइज मन को रूहानी यात्रा कराएगी जिससे मन सदा बिजी रहेगा, व्यर्थ संकल्प समाप्त होंगे, बाप सामान गुणों व शक्तियों से भरपूर होंगे, ख़ुशी रहेगी , उमंग-उत्साह बढ़ेगा तथा उड़ती कला का अनुभव होगा ।